# मोरंगे

मई–जून 2018

# इस बार


**खिड़की**

**3** आटे का लड़का

**कविताएँ**

**5** आया बंदर
कलंदर
सर्दी का मौसम

**6** Winter

**कहानियाँ**

**7** पानी के पौधे

**8** अमानत

**9** मुझे खा लो

**10** चोरी का काम

**11** कीचड़

**अंजली मीना**
उम्र–9 वर्ष,
समूह–रोशनी


**याद की धूप–छाँव में**

**12** आखिर बस को आना पड़ा

**बात लै चीत लै**

**14** नया जन्म

**16 मटरगश्ती बड़ी सस्ती**

**हीहीही–ठीठीठी**

**17 कुछ हमने बढ़ायी**



**सम्पादन : विष्णु गोपाल**
**सहयोग :** उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
**डिज़ाइन :** अश्विनी कुमार पंकज
**प्रूफ़ :** जगदीश प्रसाद सैनी
**वितरण :** जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – राज सोनवाल, कक्षा–10, समूह–खुशबू
**वर्ष 8 अंक 95–96**

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।



**प्रबंधन**
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

**पत्रिका का पता**
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

# आटे का लड़का

एक बूढ़ा आदमी और एक बूढ़ी औरत अपने पुराने घर में रहते थे। उनके कोई बच्चा नहीं था। वो बूढ़ी औरत बहुत चाहती थी कि उसका एक छोटा लड़का हो। इसलिए उसने आटे का एक छोटा सा लड़का बनाया। फिर उसने उसे पकाने के लिए गर्म भट्टी में रखा।

भारती गाँव–जगनपुरा

जब औरत ने भट्टी का दरवाजा खोला तब उसमें से आटे का छोटा लड़का कूदकर बाहर भागा। फिर वह घर के दरवाजे से बाहर निकला।

''रूको रूको'' बूढ़ी औरत चिल्लाई।

''रूको रूको'' बूढ़ा आदमी चिल्लाया।

उस आटे के लड़के ने कहा, ''तुम चाहे जितनी तेज दौड़ो पर तुम मुझे पकड़ नहीं पाओगे क्योंकि मैं आटे का लड़का हूँ।''

आटे का लड़का दौड़ता गया। वो एक गाय के आगे निकला।

''रूको रूको'' गाय ने कहा।

पर आटे के लड़के ने कहा, ''मैं एक बूढ़े आदमी और एक बूढ़ी औरत को छोड़कर भागा हूँ। मैं तुम्हें भी छोडकर भाग सकता हूँ।

आटे का लड़का दौड़ता गया। कुछ देर में वो एक घोड़े के आगे निकला।

''रूको रूको'' घोड़े ने कहा।

पर आटे के लड़के ने कहा, ''मैं एक बूढ़े आदमी, एक बूढ़ी औरत और एक गाय को छोड़कर भागा हूँ। मैं तुम्हें भी छोड़कर भाग सकता हूँ। सच में।''

आटे का लड़का दौड़ता गया। कुछ देर में वो एक किसान के आगे निकल गया।

''रूको रूको'' किसान ने कहा।

पर आटे के लड़के ने कहा, ''मैं एक बूढ़े आदमी, एक बूढ़ी औरत, एक गाय और एक घोड़े को छोड़कर भागा हूँ। मैं तुम्हे छोड़कर भी भाग सकता हूँ।''

फिर आटे का लड़का दौड़ता गया। अंत में वो एक नदी के पास पहुँचा। वो वहाँ जाकर रूका। वहाँ एक लोमड़ी दौड़ रही थी। लोमड़ी ने आटे के लड़के को देखा। लोमड़ी को लगा कि आटे के लड़के को खाने में उसे बहुत मजा आयेगा। लोमड़ी बहुत चालाक थी। उसने आटे के लड़के से कहा, ''मैं नदी पार करने में तुम्हारी मदद करूँगी। आओ तुम मेरी पूँछ पर बैठ जाओ।''

**अंकित महावर,** उम्र–12 वर्ष, समूह–पीपल

फिर आटे का लड़का लोमड़ी की पूँछ पर बैठ गया। लोमड़ी नदी में तैरने लगी।

''तुम पीछे भीग रहे हो'' लोमड़ी ने कहा। ''तुम पूँछ से मेरी पीठ पर आकर बैठ जाओ।''

फिर आटे का लड़का लोमड़ी की पूँछ पर आकर बैठ गया।

तब लोमड़ी ने कहा, ''तुम बहुत भारी हो मेरी पीठ पर बहुत बोझ है। कृपा तुम मेरे सिर पर आकर बैठ जाओ।''

फिर लोमड़ी ने कहा, ''तुम मेरे सिर के लिए भी बहुत भारी हो। कृपया तुम कूदकर मेरी नाक पर आकर बैठ जाओ।''

फिर आटे का लड़का कूदकर लोमड़ी की नाक पर बैठ गया। फिर लोमड़ी ने अपना सिर घुमाया और फिर वो झट से आटे के लड़के को चबा गई।

**हेरीएट (चिल्ड्रन्स बुक)**

## कविताएँ

# आया बंदर

बंदर आया, बंदर आया
झूम झूम के बंदर आया
डम डम ढोलक बजाता आया
गीत, गाने गाता आया
हलवा पूरी खाता आया
बंदर आया, बंदर आया।

**भारती भाई,**
उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

**भूमिका जाट** कक्षा–5, रा.उ.मा.वि., मेईकलां

# कलंदर

एक बड़ा मोटा सा बंदर
घुस आया कमरे के अंदर
पहले खाये सेब संतरा
फिर खाये अंगूर चुकंदर
पापा आए डंडा लेकर
भाग गया शैतान कलंदर।

**गरिमा,**
समूह–तिरंगा, उम्र–13 वर्ष

**कुलदीप बैरवा,** कक्षा–4, रा.उ.प्रा.वि. मेईखुर्द

# सर्दी का मौसम

धून्ध बड़ी जोरों की है
ना कुछ दिखता हमको आगे
ना कुछ दिखता हमको पीछे
फिर भी हम सड़कों पर भागे
चलते फिरते गिरते जाते
हवा चली तो थर–थर काँपे
आग जलाकर हाथ सेंकते
पूआ–पूड़ी गरम बनाते

**मनीषा,**
समूह–रंगोली, उम्र–11 वर्ष

# Winter

Winter come again
I am very cold
I wear sweater
I wear scarf
I wear socks
I wear shoes
Then i go to school
Winter come again
I am very cold
I drink hot milk
I eat jiggery
And I eat spleen
Then I go to sleep
Winter come again.

**आशा यादव,**
शिक्षिका,
उदय सामुदायिक
पाठशाला जगनपुरा

**खुशबू चौधरी**, कक्षा–6,
रा. उ. मा. विद्यालय, मेईकलां

कहानी

# पानी के पौधे

मीनाक्षी मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–संगम

एक समय की बात है। पृथ्वी पर वर्षा नहीं होने के कारण नदी, तालाब, झरने, कुए आदि सूखने लगे। धीरे–धीरे पृथ्वी से पानी समाप्त होने लगा। पशु–पक्षी, जंगली जानवर, मनुष्य सभी घबराने लगे कि अब क्या होगा? उसी समय पर सारे जानवर और मनुष्य एकत्रित होकर सोचने लगे कि अब ऐसा क्या किया जाये जिससे इस समस्या का समाधान हो सके। तभी एक खरगोश चिल्लाकर बोला, ''मेरे पास एक उपाय है।''

सभी ने कहा, ''बताओ।''

खरगोश ने कहा, ''सभी मेरे पीछे–पीछे आ जाओ।''

खरगोश आगे–आगे चलता रहा और सभी जानवर व मनुष्य उसके पीछे–पीछे चलते रहे। खरगोश एक बनिये की दुकान पर गया और कहा, ''हमें सभी तरह के पौधों के बीज दे दो।'' बनिया इतने सारे जानवरों और मनुष्यों को देखकर घबरा गया। उसने उसकी दुकान में उपलब्ध सारे सभी तरह के बीज दे दिये। सभी अपने–अपने हाथों में बीजों को लेकर खरगोश के पीछे–पीछे चल दिये। खरगोश उन सभी को समुद्र के किनारे स्थित एक बंजर जगल में ले गया। वहाँ की जमीन बिल्कुल खाली एवं सपाट थी।

खरगोश ने उन सभी से कहा, ''तुम सब मिलकर यहाँ पाँच–पाँच गड्डे खोदो और उनमें एक–एक बीज लगा दो और समुद्र में से पानी लाकर इसमें डाल देना। हमारी पृथ्वी पर और जगहों पर पानी नहीं है, केवल समुद्र का पानी ही बचा है। इसे हम पी नहीं सकते। इस पानी का उपयोग हम इन बीजों को उगाने में करेंगे तो ये बीज उगकर पेड़–पौधे बन जायेंगे। यहाँ पर वर्षा होने लगेगी।'' सभी ने खरगोश की बात मानी और बीजों में पानी देने लग गये। धीरे–धीरे बीजों से निकले पौधे बड़े होने लगे और चारों तरफ हरियाली नजर आने लगी। सभी जानवरों और मनुष्यों ने खरगोश को बहुत धन्यवाद दिया।

खरगोश ने कहा, ''आज के बाद कोई भी पेड़ नहीं काटेगा, यदि आप पेड़ों को काटोगे तो हरियाली खत्म हो जायेगी और फिर वर्षा नहीं होगी।''

सभी ने खरगोश की बात पर सहमति जताई और कहा कि आज के बाद हम पेड़ नहीं काटेंगे और एक साल में एक पेड़ जरूर लगायेंगे।

**मुरारी लाल**, शिक्षक, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र सवाई माधोपुर

# अमानत

**दीपिका मीना**,
उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू

एक बार एक सेठ और एक व्यापारी था। एक दिन व्यापारी व्यापार करने के लिए विदेश जा रहा था। व्यापारी के पास एक सोने का तराजू था। विदेश जाने से पहले उसने सोने का एक तराजू एक सेठ को संभला दिया और व्यापारी ने कहा, ''सेठ भाई, मैं व्यापार करने के लिए विदेश जा रहा हूँ। मैं विदेश से व्यापार करके वापस लौटूंगा तो मेरा यह तराजू मुझे वापस लौटा देना। तब तक तुम इसे संभालकर अपने पास रख लो।''

व्यापारी फिर व्यापार करने के लिए विदेश चला जाता है। इधर सेठ को लालच आ जाता है। वह सोने के तराजू अपने साथ लेकर परिवार सहित गाँव छोड़कर जाने लगता है। उसका बेटा सेठ से कहता है, ''पिताजी आप किसी दूसरे का सामान लेकर मत भागो, यह चोरी करने के समान अपराध हैं। मैं आपके साथ यह गाँव छोडकर नहीं जाऊँगा।''

सेठ का बेटा रोने लग जाता है फिर सेठ नहीं मानता और जाने लगता है। उसका बेटा कहता है, ''पिताजी मैं आखिरी बार कहता हूँ, रूक जाओ नहीं तो मैं पुलिस को बुलाकर ले आऊँगा।''

सेठ ने अपने बेटे की बात नहीं मानी और वह बेटे को भी छोड़कर बस में बैठकर चला गया। बेटा पुलिस के पास पहुँचा और पुलिस को सारी बात बताई। पुलिस ने कहा तुम्हारे पिता की यदि कोई फोटो हो तो हमें दे दो ताकि उन्हें ढूंढने में आ. सानी होगी। सेठ के बेटे ने उन्हें सेठ की फोटो दे दी। पुलिस सेठ के बेटे के बताये अनुसार दूसरे गाँव में गई और सेठ को पकड़कर थाने ले आई। फिर सेठ को कड़ी सजा हुई।

**लाली सैनी**, समूह–तिरंगा, उम्र–11 वर्ष

**लक्ष्मी गौड़**, उम्र–8 वर्ष, समूह–खूशबू

# मुझे खा लो

एक बार एक राजा था। उसके घर पर एक गुडिया रहती थी। वह गुडिया बहुत सुन्दर थी। उसका नाम प्यारी परी था। एक दिन राजा शिकार खेलने के लिए जंगल में गया। उसे एक शेर मिला।

शेर बोला, ''मैं तुम्हें खाऊंगा।''

राजा बोला, ''खा लो लेकिन मुझे कल खाना, क्योंकि मेरी नन्हीं परी मुझे याद कर रही होगी। मैं उससे मिलकर वापस आ जाऊंगा तब मुझे खा लेना।''

शेर बोला, ''मैं तुम पर भरोसा कैसे करूँ कि तुम कल वापस आ जाओगे?''

राजा ने कहा, ''यदि कल मैं वापस यहाँ नहीं आऊँ तो तुम मेरे घर पर आ जाना।''

शेर ने कहा, ''ठीक है।''

राजा दु:खी होकर घर चला गया। नन्हीं परी बोली, ''पापा आप आज इतने दु:खी क्यों हो?'' राजा बोला, ''बेटी क्या करूँ, कल शेर मुझे खा जायेगा।''

नन्हीं परी बोली, ''पापा आप चिंता मत करो, आप महल में सो जाना, कल मैं जंगल में चली जाऊँगी।''

अगले दिन परी जंगल में चली गई तो उसके सामने शेर आ गया। वह शेर से बोली, ''शेर राजा मैं आपसे निवेदन करती हूँ कि आप मेरे पिताजी को मत खाइयें और उनकी जगह मुझे खा लो। मैं अपने पिता से बहुत प्यार करती हूँ। उनके सिवाय इस दुनिया में मेरा कोई नहीं है।''

शेर को नन्हीं परी पर दया आ जाती है। शेर उसे छोड़ देता है। वह खुशी–खुशी वापस घर आ जाती है। दोनों बहुत खुश होते हैं।

**मनीषा**, समूह–रंगोली, उम्र–11 वर्ष

# चोरी का काम

**गोलमा मीना**, उम्र–7 वर्ष, समूह–संगम

एक दिन की बात है। एक राजा जंगल में सैर करने के लिए गया। जंगल में जाते–जाते उसको रात हो गई। वह एक पेड़ के नीचे जाकर सो गया। वह चोरों का इलाका था। राजा के पास एक चोर आया। चोर ने सोचा कि आज तो अपना काम बन गया। चोर ने राजा के सोने की माला, मुकुट और उसका सोने का हार भी चुरा लिया। चोर जब चोरी करके वहाँ से जा रहा था तो राजा की नींद खुल गई। राजा ने उस चोर को पकड़ लिया। उससे अपने सामान वापस ले लिये और उससे कहा, ''चोरी करना गलत बात है।''

चोर ने कहा, ''यह तो मुझे भी पता है, लेकिन हम लोगों के पास कोई काम धंधा नहीं है। हमें खेती करना भी नहीं आता है। इसलिए हम चोरी करते हैं।''

राजा ने कहा, ''तुम कल मेरे दरबार में आ जाना, मैं तुम्हें कोई काम दिलवा दूंगा।'' चोर दूसरे दिन राजा के दरबार में चला गया। राजा ने उसे अपने महल में पेड़–पौधों को पानी देने के काम पर लगा लिया।

**अमरसिंह मीना**, उम्र–10 वर्ष, समूह–तिरंगा

# कीचड़

**सुरभि गोयल**, उम्र–12 वर्ष, समूह–पीपल

एक बार की बात है। एक जंगल था। उसमें एक तालाब था जिस पर रोजाना एक परी स्नान करने आती थी। उसने देखा कि तालाब का किनारा बहुत गंदा रहता है। किनारों पर हमेशा गंदगी जमी रहती है। एक दिन जब परी स्नान करने आई तो तालाब का किनारा बिल्कुल साफ–सुथरा था। बिल्कुल भी गंदा नहीं था।

परी ने जंगल के सारे जानवरों से पूछा कि ''इस तालाब के किनारे की सफाई किसने की है?'' फिर सारे जानवर कहते हैं कि ''यह सफाई हमने की है।''

परी कहती है कि ''इस कार्य के लिए मैं तुम्हें इनाम दूंगी। तुम सब कल तालाब के किनारे इकट्ठा हो जाना।''

अगले दिन सारे जानवर तालाब के किनारे इकट्ठा हो गये। जब परी आई तो उसने सारे जानवरों को इनाम दी। सबसे पहले परी ने लोमड़ी को इनाम दी। क्योंकि उस लोमड़ी ने सबसे ज्यादा सफाई में मदद की थी। जब लोमड़ी इनाम लेकर जंगल में जाती है तो उसे रास्ते में एक मक्खी दिखाई देती है।

लोमड़ी ने मक्खी से कहा कि ''आज परी सभी जानवरों को इनाम दे रही है। क्योंकि हम सब जानवरों ने मिलकर तालाब के किनारे की सफाई की थी। जाओ तुम भी अपना इनाम ले जाओ।''

मक्खी बोलती है कि ''मैंने तो सफाई भी नहीं की थी, मैं इनाम लेने क्यों जाँऊ, और वैसे भी मेरे हाथ–पैर कीचड़ के हो रहे हैं।''

लोमड़ी कहती है कि ''परी तुम्हें इनाम देगी। तुम्हारे हाथ–पैर थोड़े देखेगी।''

मक्खी बोलती है कि ''क्या तुम सच बोल रही हो?''

लोमड़ी कहती है कि ''मैं झूठ क्यों बोलूंगी।'' फिर व मक्खी परी के पास इनाम लेने चली जाती है। जब मक्खी की इनाम लेने की बारी आती है तो परी चिल्लाती है और कहती है ''इस मक्खी को यहाँ से भगाओ। इस मक्खी के हाथ–पैर पर कीचड़ लगा हुआ है।''

सारे जानवर यह सुनकर मक्खी को वहाँ से भगा देते हैं। मक्खी को इस बात से बहुत दुःख होता है। वह वहाँ से चली जाती है और फिर कभी लोमड़ी की बातों पर भरोसा नहीं करती।

**सुरभी**, उम्र–11 वर्ष, समूह–खेजड़ी

# आखिर बस को आना पड़ा

काजल महावर, उम्र–12 वर्ष, समूह–पीपल

जनवरी 2018 को मैं अपने गाँव डिडायच से शाम 5:00 बजे बस से सवाई माधोपुर के लिये रवाना हुआ। मुझे फरिया जाना था। मैं शाम 7:30 बजे सवाई माधोपुर में खंडार बस स्टैंड पर पहुँच गया। अब मुझे फरिया जाने के लिये खंडार वाली बस पकड़नी थी। मैने वहाँ खड़े लोगों से खंडार जाने वाली बस के बारे में पूछा, तो लोगों ने बताया कि अभी–अभी थोड़ी देर पहले बस निकल गई है। वाक्य सुनकर में घबरा गया। क्योंकि बहुत तेज ठण्ड पड़ रही थी। रात भी बहुत हो गई थी। रास्ते पर लोगों की संख्या भी कम नजर आ रही थी। अब यहाँ 6–7 औरतें और उनके साथ 3 आदमी और 4–5 छोटे बच्चे थे। मैनें उनसे बात की आप कहाँ जायेंगे? तो उन्होने बताया की हम खंडार जायेंगे। उनसे पता चला कि अब 8:30 पर रोडवेज बस आयेगी। मैंनें राहत की सांस ली ''चलो साथ भी मिला और साधन भी '' अब मैं बस का इन्तजार करने लगा। इन्तजार करते–करते 8:45 हो गये तो सभी को चिन्ता होने लगी। कुछ औरतें कहने लगी ''अगर बस नहीं आई तो क्या करेंगे?'' पर उन्हीं में से कुछ कह रहे थे कि बस जरूर आयेगी।

इसी चर्चा के बीच एक औरत ने कहा, ''भाई साहब आपके पास कोई नम्बर हो तो डिपो पर फोन करके पूछो ना।'' मैने कहा, ''मेरे पास कोई नम्बर नहीं है।'' अब सभी को घबराहट होने लगी। इसी समय एक पुलिसकर्मी वहाँ आया। मैंने उससे बस के बारे में पूछा तो वह भी कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे सका। सिटी बसें अब बंद हो चुकी थी। चारों तरफ से अब कोई आशा की किरण नजर नहीं आ रही थी। जो हमारी सहायता कर सके। क्या करें क्या न करें? इसी द्वन्द में रात 9 बज गये। तभी मुझे सचिन जी की बात याद आई जो उन्होंने कार्यशाला में कही थी ''तुम स्वयं को ढूंढ लो बाकी सब गूगल ढूंढ लेगा।'' मैने अपना मोबाइल निकाला और खोलकर उसमें सवाई माधोपुर रोड़वेज डिपो लिखा तो मुझे डिपो के बेसिक नम्बर मिल गये। मैंने उन नम्बरों पर फोन किया तो उपस्थित कर्मचारी ने कहा 10

मिनट बाद बस आ जायेगी। यह सुनकर सभी की जान में जान आई। अब हम पुनः बस का इन्तजार करने लगे।

इन्तजार करते–करते 20 मिनट हो गये तो मैने पुनः फोन किया। उपस्थित कर्मचारी ने कहा, ''ड्राईवर ने शराब पी रखी है, इसलिए आज बस नहीं जायेगी।''

कर्मचारी की बात सुनकर मेरे पैरों तले की जमीन खिसक गई। मैने कर्मचारी को समझाने की काफी विनती की। हमारे साथ 6–7 औरते व छोटे बच्चे हैं और हमें खंडार जाना है। पर कर्मचारी ने मेरी एक नहीं सुनी और फोन काट दिया। मैने फिर फोन मिलाया तो उसने कहा, ''बस नहीं आयेगी। क्यों बार–बार परेशान कर रहे हो।'' यह कहकर उसने फोन काट दिया।

अब क्या करें! मैने फिर गूगल खोला और उसमें रोड़वेज कन्ट्रोल रूम जयपुर लिखा, तो मुझे कन्ट्रोल रूम के नम्बर मिल गये। मैने फोन किया और पूरी स्थिति से अवगत करवाया। उन्होनें मेरी बात को ध्यान से सुना और मुझे माधोपुर डिपो के सीनियर अधिकारी के नम्बर देते हुए कहा, ''मेरा नाम ले लेना।''

मैने फोन किया और अधिकारी को सारी स्थिति बताई तो उसने भी कहा, ''आज ड्राईवर भी कम है, जो है उसने शराब पी रखी है। अब क्या कर सकते हैं।'' मैंने उनसे विनती करते हुए तेज ठण्ड और बच्चों का हवाला दिया। पर उसने अपनी मजबूरी बताते हुए फोन काट दिया। मुझे लगा अब विनती से काम नहीं चलेगा। मुझे गुस्सा आ रहा था पर किसी का कर भी क्या सकता था। हिम्मत करके मैंने एक बार फिर फोन किया और कहा, ''या तो आप बस भेजो नही ंतो हम सब आपके पास आ रहे हैं और मैं अभी अरविन्द जी के पास फोन करता हूँ जो ई टी.वी राजस्थान के स्थानीय पत्रकार हैं।'' यह बात सुनकर अधिकारी स्थिति को भांप गया और उसने समझा अगर हम लोग पत्रकार को लेकर आ गये तो समस्या हो सकती है। उस समय तो उसन कुछ कहे बिना ही फोन काट दिया।

रात के पौने दस बज चुके थे और अब हम थक चुके थे। उसी समय अंधेरे को चीरती हुई एक बस हमारे पास आकर रूकी। परिचालक ने दरवाजा खोला और कहा, ''खंडार जाने वाले आप ही हो क्या?'' मुझे तो विश्वास ही नहीं हुआ कि बस हमारे लिए आई है। बस पूरी खाली थी। बस में बैठने के बाद हमारी सांसों में जान आई और पता ही नहीं चला कि कब फरिया आ गया। मैं फरिया उतर गया तो बस खंडार के यात्रियों को लेकर खंडार चली गई। दूसरे दिन स्कूल पर मैने सारी घटना अपने साथियों को बताई तो उन्होंनें यही कहा, ''यही तो है ग्रामीण शिक्षा केन्द्र की शिक्षा और प्रशिक्षण का कमाल। जिसके शिक्षक और बच्चे समस्या का समाधान खोजने तक लगे रहते हैं।

**बेनी प्रसाद शर्मा**, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

# नया जन्म

एक बार एक राजा की रानी कुए पर नहा रही थी। तभी उधर से उसकी सहेली वहाँ पर आ गई। रानी ने सहेली को देखकर कहा, ''आज तुम भी मेरे साथ नहा लो।'' उन दोनों की शक्ल एक जैसी थी। जब वे नहा ली तो रानी की सहेली ने कहा, ''तुम्हारे कपड़े बहुत अच्छे हैं क्या हम अपने कपड़े थोड़ी देर के लिए अदल–बदल कर लें?'' रानी के हाँ कहने पर उन्होंने अपने कपड़े आपस में बदल लिये। अब रानी की सहेली ने कहा, ''हम अपना मुँह कुए में देखते हैं।'' जैसे ही रानी ने अपना मुँह कुए की तरफ किया तो उसकी सहेली ने रानी के धक्का दे दिया और वह कुए में गिर गई। अब उसकी हमशक्ल रानी बन जाती है। थोड़ी देर

**कृष्णा मीना**, उम्र–8 वर्ष, समूह–खुशबू

बाद जब राजा नहाने के लिए आता है तो उसकी बाल्टी में एक कमल का फूल आ जाता है। राजा उस फूल को महल में ले जाकर रख देता है। रानी जब दाल बनाती है तो वह फूल कहता है –

खदड़–खदड़ काई सीजे
काड़ी–राड़ का दिया सीजे

तो वह रानी उस फूल को गड्डे में गाड़ आती है। गड्डे में काचरी उग आती है। राजा उसको तोड़ कर ले आता है और रानी से कहता है कि आज काचरी की सब्जी बना लो। रानी ने जब काचरी की सब्जी बनाई और वह सीजने लगी तो उसमें

से आवाज आई –

खदड़–खदड़ काई सीजे

काड़ी–राड़ का दिया सीजे

रानी उसको महल के आगे फेंक देती है। महल के आगे एक कैरी का पेड़ उग आता है। जब रानी सब्जी बनाती है तो उस कैरी के पेड़ में से आवाज आती है –

खदड़–खदड़ काई सीजे

काड़ी–राड़ का दिया सीजे

तो वह रानी राजा से कहती है ''इस पेड़ को कटवा दो। मैं जब झाड़ू निक. ालती हूँ तो मेरे इन कैरियों की लगती है।'' राजा ने उस पेड़ को कटवा दिया और

**संदीप भाटिया**,
कक्षा–4, रा.उ.प्रा.वि. मेईखुर्द

सारे गाँव वालों को कैरियाँ दे दी। गांव में एक बुढ़िया और लड़का रह जाता है तो राजा बुढ़िया को एक कच्ची केरी देता है। बुड़िया उसे पकने के लिए कोठे के गेहूं में गाड़ देती है। उस केरी में से एक सुंदर सी राजकुमारी निकलती है। बुढ़िया जब बकरियों को चराने जाती है तो वह राजकुमारी घर का सारा काम कर देती है। बुढ़िया ने अपने लड़के से कहा कि अब वह कच्ची कैरी पक गई होगी उसे निकाल लाती हूँ। बुढ़िया ने उस कोठे को खोला तो उसमें से एक सुंदर राजकुमारी निकली। बुढ़िया ने उसको भी अपनी लड़की बना लिया। जब उसने खाट पर धूप में हल्दी सुखाई तो उसको चरने वहाँ पर एक सुंदर सा घोड़ा आया। राजकुमारी ने कहा ''मैं इससे शादी करूंगी'' बुढ़िया ने उसकी शादी करवा दी और वह सुंदर घोड़ा एक राजकुमार के रूप में बदल गया और सुंदर लड़की उसके साथ खुशी से रहने लगी।

**बुद्धिप्रकाश गुर्जर**, उम्र–12 वर्ष, समूह–सागर

## मटरगश्ती बड़ी सस्ती

# भाषा की सहेलियाँ
# बूझो यार पहेलियाँ

1. पंख नहीं पर उड़ती हूँ, हाथ नहीं पर लड़ती हूँ।
2. न चाबी है न ताला, फिर फसता है फसने वाला।
3. रात में जिंदा, दिन में मुर्दा।
4. दो भाई एक बिस्तर प सूत्या।
5. काका मैंने कौआ देखा, कह भतिजा किस्यो देख्यो, लाकड़ी पर बैठ्यो देख्यो।

**समूह–सागर के बच्चे,** उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

**रचना प्रजापत,**
कक्षा–6, रा.उ.मा.वि. मेईकलां

# हीहीही ठीठीठी

1. मच्छर का खून करने के इल्जाम में चींटी को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस वाले चींटी से पूछते हैं, ''तुमने रात को ऐसा क्या किया कि मच्छर मर गया?'' चींटी बड़ी मासूमियत से कहती है, ''कुछ भी नहीं, मैं तो बस रात को मोर्टीन जलाकर सोई थी।''

2. चोर एक घर का ताला तोड़ रहा था। जैसे ही ताला टूटा चोर के पीछे एक आहट हुई। चोर ने जैसे ही पीछे मुड़कर देखा घर का मालिक उसके पीछे खड़ा था। चोर घबरा गया। मकान मालिक ने उसे तसल्ली देते हुए कहा, ''मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूँ, क्योंकि इस ताले की चाबी मुझसे कहीं खो गई थी।''

# कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
# बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

**बरसाना बैरवा,**
कक्षा–3, रा.उ.मा.वि. रांवल

**एक बार की बात है। एक गाँव था। उस गाँव में एक आदमी रहता था। वह बहुत गरीब था। उसके पास पैसे नहीं थे। वह रोज दूसरों के पास मांगने जाता था। परन्तु लोग उसे पैसे नहीं देते थे .....**

**सपना बैरवा,** *समूह–सूरज, उम्र–9 वर्ष द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

**एक राजा की दुकान**
**उसके आगे सेठ का मकान**

**आकाश गुर्जर,** *समूह–संगम, उम्र–10 वर्ष द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

**प्रिति बैरवा**, कक्षा–5, रा.प्रा.वि. पावण्डी

**माह जनवरी–फरवरी, 2018 के अंक में अरविन्द मीना, कक्षा–8, उम्र–12 वर्ष, समूह–बिजली, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार द्वारा शुरू की गई कहानी को निम्न बच्चों ने पूरा करके भेजा है–**

*एक राजा था। वह बहुत ही अमीर था। उसको अपने धन पर अभिमान था। वह बहुत सारा धन रोज अपनी प्रजा में बांट देता था। धीरे–धीरे सारी प्रजा बहुत अमीर हो गई। सभी ने बड़े–बड़े महल बना लिये थे। इसलिए सारी प्रजा उसका कहना नहीं मानती थी.....*

**गौरव**, कक्षा–6, समूह–फुलवारी

.....राजा बहुत परेशान हो गया। राजा ने धन देना बंद कर दिया। परन्तु प्रजा को उससे कुछ भी फर्क नहीं पड़ा। एक दिन राजा ने एक तरकीब लगाई सारी प्रजा के घरों में चूहे छोड़ दिये। कुछ दिनों बाद प्रजा के घरों में सारा अन्न समाप्त हो गया। परन्तु प्रजा के पास राजा के द्वारा दिया धन था। उससे उन्होंनें दूसरे शहर में जाकर अन्न ले आये। राजा बहुत अप्रसन्न हुआ। राजा ने दूसरी तरकीब लगाई। सारे शहर में कुत्ते व बहुत सारे सुअर छोड़ दिये। अब प्रजा का जीना हराम हो गया था। प्रजा बहुत परेशान हो गई। राजा को भी यह देखकर बहुत दुःख हो रहा था। राजा के समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाये। फिर प्रजा ने सोचा कि अब हमारे पास एक ही रास्ता है कि राजा से माफी मांग लें। राजा हमें अवश्य ही माफ कर देगा। परन्तु हमने राजा की बात नहीं मानकर बहुत बड़ी गलती की है। अब हम क्या करें? एक व्यक्ति बोला चलों राजा से माफी मांग लेते हैं। सारी प्रजा ने राजा से माफी मांग ली। राजा ने भी अपनी प्रजा को माफ कर दिया। राजा बोला मुझे अपने धन पर अभिमान था इसलिए मुझसे मेरा सारा धन भगवान ने ले लिया।

**हरिओम सैनी**, कक्षा–6, रा.उ.प्रा.वि. सोनकच्छ

..... इस बात से राजा बड़ा दुःखी रहता था। फिर एक दिन राजा के पास एक साधु आया। साधु ने राजा से पूछा कि, ''पुत्र तुम इतने दुःखी क्यों हो?'' राजा ने अपना दुःख साधु को बताया। यह सुनकर साधु हंसने लगा और कहा, ''यह सब तुम्हारे कर्मों का ही फल है। यदि तुम अपने घमंड में प्रजा को धन नहीं बांटते तो ऐसा नहीं होता।'' साधु की बात सुनकर राजा अपने आप पर बहुत शर्मिंदा हुआ और साधु से कहा, ''महाराज मुझे मेरी अज्ञानता पर पछतावा है। अब आप ही मेरे दुःख का निवारण कीजिए।'' उस समय साधु वहाँ से चला गया फिर दूसरे दिन जब दरबार लगा तो सभी प्रजा के लोग अपने हाथों में पोटली लिए हुए खड़े थे। वो साधु भी दरबार में आया। राजा ने प्रजा से पूछा कि आप सब यहाँ क्यों आए हैं और आपके हाथों में यह क्या है? उनमें से एक ने कहा महाराज हम सभी अपने अपराध के लिए लिए क्षमा मांगने आये हैं। हमारे हाथों में आपके द्वारा दिये गये धन की पोटली है। इसे हम आपको वापस लौटाने आये हैं। राजा ने सोचा कि कल तक तो ये मेरी बात नहीं मानते थे आज ये कैसे हुआ फिर राजा ने साधु से पूछा कि क्या यह सब आपने किया है। साधु ने कहा कल प्रवचन की सभा में सभी प्रजा के लोग आये। मैंने इन लोगों को राजा के महत्व के बारे में बताया जिस प्रकार वायु के बिना सुगंध का कोई अस्तित्व नहीं होता उसी प्रकार राजा के बिना प्रजा का कोई महत्व नहीं होता। यदि राजा का राज्य ही समाप्त हो गया तो आप सभी पर विपदायें आ जायेंगी। सभी को मेरी बात समझ में आ गई और अपनी गलती मानकर आपके पास क्षमा मांगने के लिए चले आये। यह सब सुनकर राजा को बहुत खुशी हुई। फिर राजा के कहने पर प्रजावासियों से धन लेकर राजकोष में जमा कर लिया गया।

**अंजली जाट**, कक्षा–8, रा.उ.मा.वि. मेईकलां

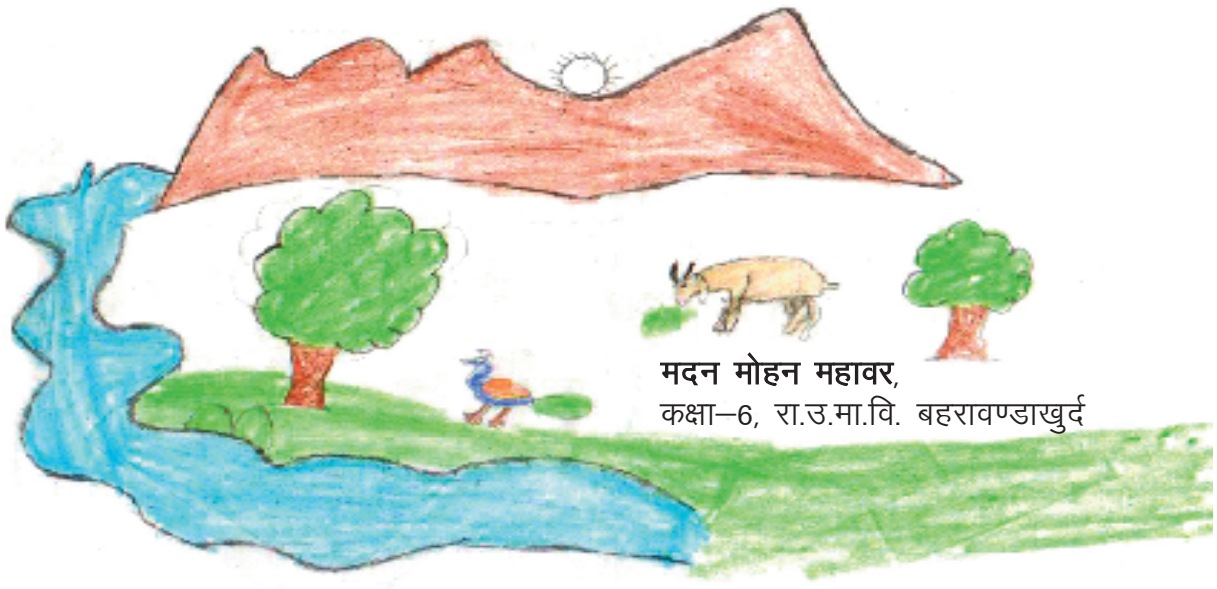

**मदन मोहन महावर**,
कक्षा–6, रा.उ.मा.वि. बहरावण्डाखुर्द

.....राजा ने भी अब धन देना बंद कर दिया तो प्रजा सोचने लगी कि हमारे पास तो बहुत सारा धन है अब हमें मेहनत करने की आवश्यकता नहीं है। फिर प्रजा ने मेहनत करना बंद कर दिया। कुछ दिनों बाद प्रजा का धन भी समाप्त होने लगा तो प्रजा वापस अपने राजा के पास आई और राजा से माफी मांगी। राजा ने उनको माफ कर दिया फिर राजा और प्रजा खुशी से रहने लगे।

**कीर्ति चौधरी**, कक्षा–7, रा.उ.मा.वि. मेईकलां

..... इससे राजा बहुत नाराज हुआ। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। एक दिन प्रजा के दो व्यक्तियों के बीच आपस में झगड़ा हो गया तो वे समाधान के लिए राजा के पास आये। उन्होंने अपनी–अपनी समस्या राजा को बताई। राजा ने उनसे कहा कि तुम स्वयं ही अपना निपटारा कर लो, मेरी क्या जरूरत है। इससे वे दोनों बहुत शर्मिंदा हुए। यह बात प्रजा को पता चली तो प्रजा भी बहुत शर्मिंदा हुई। फिर सभी राजा की बात मानने लगे और राजा का अभिमान भी चूर–चूर हो गया। उसने अब धन बांटना भी बंद कर दिया।

**रजनी महावर**, कक्षा–7, रा.उ.मा.वि. मेईकलां

**प्रिंस मीना**,
उम्र–10 वर्ष, समूह–झरना

..... राजा यह देखकर बहुत दु:खी हुआ। उसने सोचा कि प्रजा तो मेरी बात नहीं मानती है। राजा ने सोचा कि अगर मैं प्रजा को इतना धन नहीं देता तो यह प्रजा अमीर नहीं होती। धीरे–धीरे प्रजा के लोग महल पर अधिकार जमाने लगे। राजा धीरे–धीरे गरीब हो गया। उस राजा को महल व गांव से बाहर निकाल दिया गया तो राजा वहाँ से चला गया और नदी के किनारे कदम के पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगा। तब वहाँ एक दयालू महात्मा आया उसने राजा से पूछा हे राजन् तुम यहाँ क्यों रो रहे हो तो राजा ने सारी बात बता दी। महात्मा ने कहा कि यह तुम्हारे कर्मो का फल है जो तुम्हें भुगतना है।

**गायत्री महावर**, कक्षा–7,
रा.उ.मा.वि. मेईकलां

.....राजा ने सोचा कि कुछ दिनों तक प्रजा को धन बांटना बंद कर देना चाहिए। प्रजा भी धीरे–धीरे घमण्ड करने लगी और अपने आप को धनवान समझने लगी। धीरे–धीरे प्रजा के पास का सारा धन समाप्त हो गया। अब प्रजा को पछतावा होने लगा। अब प्रजा के पास कोई उपाय नहीं बचा। उनके पास एक ही उपाय था कि हम सब मिलकर राजा के पास माफी मांगने चलें। सभी लोग राजा के पास माफी मांगने गये और राजा ने उन्हें कहा कि तुम्हें रोज बिना मेहन किये हुए धन मिलने के कारण तुम सभी लोग आलसी हो गये हो। इसलिए अब तुम सभी लोग मेहनत करोगे और सभी लोग अपनी मेहनत का खायेंगे। फिर सभी लोग मेहनत करने लगे और सभी लोग राजा की बात मानने लग गये इससे राजा भी बहुत खुश हुआ।

**अंजलि मीना,**
कक्षा–5
रा. उ. मा. विद्यालय,
गण्डावर

**राजू सैनी**, कक्षा–7, रा.उ.मा.वि. अल्लापुर

..... राजा अपनी प्रजा से कोई भी काम करने की कहता तो प्रजा राजा से कहती कि महाराज हम पहले तुम्हारी बात मानते थे लेकिन तुमने इतना धन दे दिया है कि हमने तुम्हारे बराबर के महल बना लिये हैं। इसलिए अब क्यों तुम्हारी बात माने। राजा यह सुनकर बहुत गुस्सा हुआ। राजा ने प्रजा से कहा कि मुझे धन की जरूरत है। यह सुनकर सारी प्रजा हँस पड़ी। राजा ने उनसे कहा तुम मेरी प्रजा होकर भी मेरी हँसी उड़ा रहे हो। तुम यहाँ से चले जाओ। फिर प्रजा महाराज के महल से चली जाती है। राजा अपने घोड़े पर बैठकर जंगल की ओर चला जाता है। जंगल में दूसरा राजा पहले से ही अपने सैनिकों के साथ शिकार खेल रहा था। जब दूसरे राजा ने राजा को देखा तो वह खेलते हुए रूक गया। वे दोनों राजा एक दूसरे को जानते थे इसलिए वे आपस में गले मिले। दूसरे राजा ने कहा तुम अपने साथ सै. निकों को क्यों नहीं लाये तो उस राजा ने पूरी बात बताई। बात सुनकर दूसरे राजा

की आँखों में आँसू आ गये और उसे बहुत दुःख हुआ। दूसरे राजा ने कहा कि अब तो शाम हो गई है। हम कल तुम्हारे महल में चलेंगे। वे दूसरे दिन उस राजा के महल में गये। दूसरे राजा ने कहा की पूरी प्रजा को बुलाओ। फिर प्रजा के सभी लोग महल में आ गये। दूसरे राजा ने प्रजा से कहा कि जो भी राजा के सिंहासन

**चेतना गौतम**, कक्षा–4,
रा. उ. मा. विद्यालय, अल्लापुर

को चाहता है वह मेरी बात मानेगा। सभी बात मानेंगे लेकिन मैं एक शर्त रखता हूँ कि जो सबसे अच्छा पौधा तैयार करके लायेगा उसी को मैं सिंहासन दूंगा। यह सुनकर सारी प्रजा के लोग खुश हो गये। राजा ने सभी को एक–एक बीज दे दिया। वे उस बीज को लेकर गये और खाद–बीज डालकर उसे बो दिया। परन्तु वे बीज उगे ही नहीं। प्रजा के लोग बाजार से दूसरे बीज ले आये और उनको बोकर पौधा तैयार कर लिया। फिर वे सभी एक दिन अपना–अपना पौधा लेकर राज महल में आ गये। राजा ने कहा तुम सब बैठ जाओ। राजा ने सभी से कहा कि तुम सब में से एक भी सच्चा और ईमानदार व्यक्ति नहीं है मैं अपना सिंहासन तुम्हें कैसे दे दूं। प्रजा ने कहा महाराज आपने जो बीज दिये थे उन्हें हम उगा लाये हैं। राजा ने कहा मैंने तुम्हें जो बीज दिये थे वे नकली बीज थे वे कभी उगते ही नहीं हैं। राजा ने कहा तुम सब धन के लालच में अंधे हो गये। तुम लोग अपनी ईमानदारी और सच्च. ाई को भूल गये हो। यदि तुम इसी रास्ते पर चलते रहे तो धीरे–धीरे तुम्हारा विनाश हो जायेगा। यह सुनकर प्रजा को बहुत दुःख हुआ। प्रजा के सभी लोगों ने राजा से माफी मांगी और कहा कि अब कभी धन का लालच नहीं करेंगे। फिर दूसरा राजा वापस चला गया।

**निरमा मीना**, कक्षा–7, रा.उ.मा.वि. अल्लापुर

## माह जनवरी–फरवरी, 2018 के अंक में विष्णु गोपाल द्वारा शुरू की गई कविता को निम्न बच्चों ने पूरा करके भेजा है–

*सूरज भागा चन्दा आया*
*सोया जंगल उल्लू जागा.....*

सूरत आया चंदा भागा
सोया जंगल उल्लू जागा
रात आई दिन भागा
बिल्ली आई चूहा भागा
कुत्ता आया बिल्ली भागी
बाघ आया कुत्ता भागा
शेर आया बाघ भागा।

**चेतन बैरवा**, कक्षा–7,
रा.उ.प्रा.वि. मेईखुर्द

सुबह जब आता है सवेरा
उल्लू पर छाता है अंधेरा
सूरज दादा जब तुम आते
चंदा मामा क्यों छिप जाते
सूरज चंदा दोनों भाई
पर इक बात हमें ना भाई
सूरज देख क्यों सब जले
फिर देखकर चंदा हंसने लगते
क्या दोनों में है दुश्मनी
या फिर दोनों की है शैतानी
क्या दोनों में होगी लड़ाई
तब ही मिलेंगे दोनों–भाई।

**अंजली जाट**, कक्षा–8,
रा.उ.मा.वि. मेईकलां

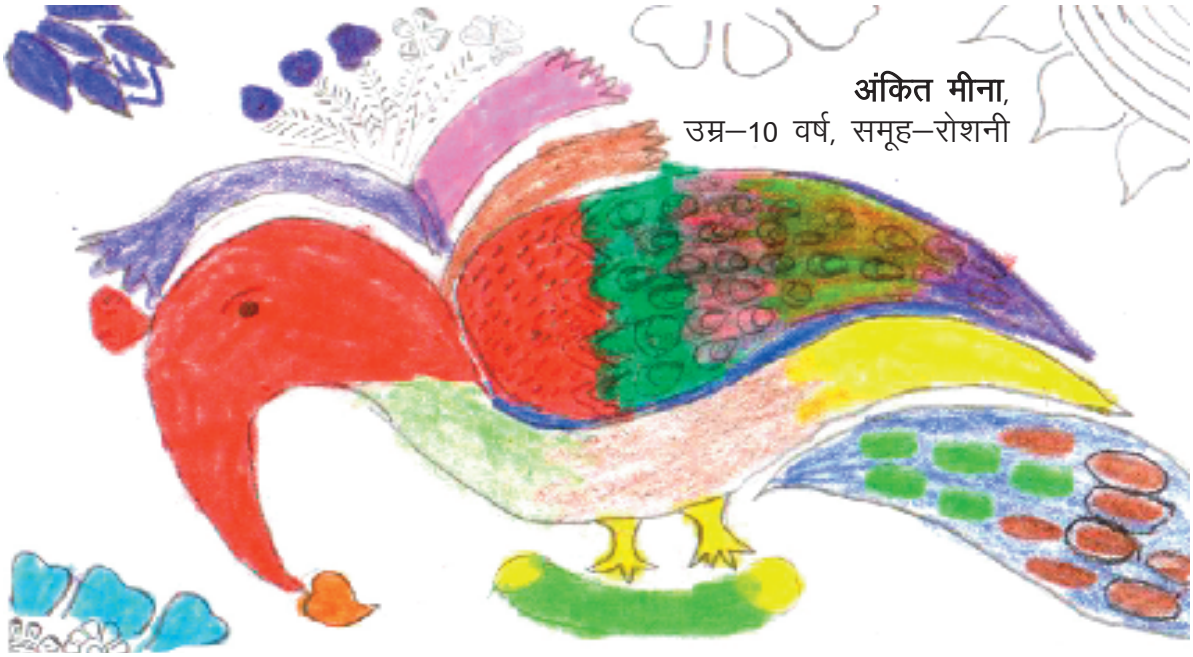

**अंकित मीना**,
उम्र–10 वर्ष, समूह–रोशनी

**पहेलियों के ज़वाब –**

1. पतंग 2. मकड़ी का जाला 3. दीपक 4. चना 5. करवाड़ी

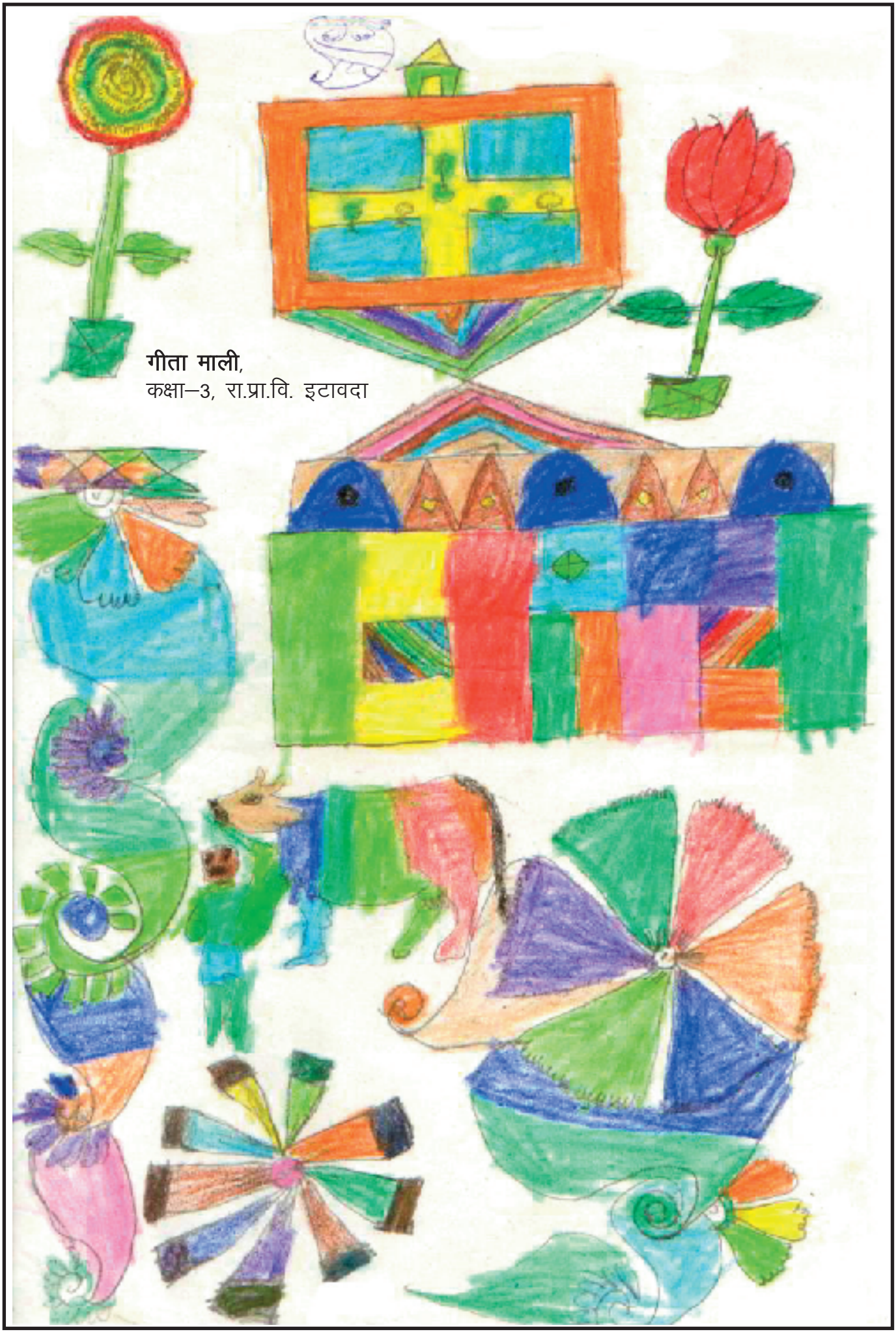

**गीता माली,**
कक्षा–3, रा.प्रा.वि. इटावदा